श्री सामायिक सूत्र
(मूल)

प्रकाशक

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(संरक्षक : अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

श्री सामायिक सूत्र
(मूल)

प्रकाशक

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(संरक्षक : अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

श्री सामायिक सूत्र (मूल)

प्रकाशक :

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182 के ऊपर,

बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)

फोन : 0141-2575997

फैक्स : 0141-4068798

Email : sgpmandal@yahoo.in

षष्ठ संस्करण : 2016

मुद्रित प्रतियाँ : 2100

मूल्य : **2.00/-** (दो रुपये मात्र)

लेजर टाइपसैटिंग

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, जयपुर

अन्य प्राप्ति स्थल :

- **श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ**
  घोड़ों का चौक, **जोधपुर-342001** (राज.)
  फोन : 0291-2624891

- **Shri Navratan ji Bhansali**
  C/o. Mahesh Electricals,
  14/5, B.V.K. Ayangar Road,
  BANGALURU-560053
  (Karnataka)
  Mob. : 09844158943

- **श्री प्रकाशचन्दजी सालेचा**
  16/62, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड,
  जोधपुर-342001 (राजस्थान)
  फोन : 9461026279

- **श्रीमती विजयानन्दिनी जी मल्हारा**
  ''रत्नसागर'', कलेक्टर बंगला रोड़,
  चर्च के सामने, 491-ए, प्लॉट नं. 4,
  जलगाँव-425001 (महा.)
  फोन : 0257-2223223

- **श्री दिनेश जी जैन**
  1296, कटरा धुलिया, चाँदनी चौक,
  दिल्ली-110006 फोन : 011-23919370
  मो. 09953723403

प्रकाशकीय

सामायिक मुक्ति की मूल साधना है। बिना समभाव प्राप्त हुए कोई भी प्राणी मुक्त नहीं हो सकता। अतः सामायिक की उपयोगिता स्वतः ही सिद्ध है। सामायिक का अर्थ होता है अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थिति में समान रहना। जैसे एक तराजू के दोनों पलड़े भार रहित होने पर उसकी सूई बराबर रहती है। सामायिक का महत्त्व बताते हुए कहा भी हैह्व

दिवसे दिवसे लक्खं देई सुवण्णस्स खंडिय एगो।
एगो पुण सामाइयं, करोड़ न पहुप्पए तस्स।।

अर्थात् एक ओर एक व्यक्ति नित्य प्रति एक लक्ष स्वर्ण मुद्राओं का दान करता है और दूसरी ओर एक व्यक्ति है जो मात्र दो घड़ी सामायिक करता है तो दोनों में से सामायिक करने वाला श्रेष्ठ है। लक्ष मुद्राओं का दान भी एक सामायिक की समानता नहीं कर सकता।

परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् श्री हस्तीमल जी म.सा. ने सामायिक-स्वाध्याय के सन्देश के माध्यम से देश में धार्मिक बिगुल

बजाया था। **पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** भी क्रिया पक्ष को मजबूत आधार देने के लिए सामायिक की विशेष प्रेरणा करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में सामायिक के मूल पाठों को देते हुए उनका महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। सामायिक सूत्र के साथ ही 24 तीर्थङ्कर, 20 विहरमान, 11 गणधर, 16 सतियाँ के नाम समाहित किये गये हैं।

इस पुस्तक के प्रूफ संशोधन में श्री त्रिलोकचन्द जैन तथा लेज़र टाइप सैटिंग में श्री प्रहलाद नारायण जी लखेरा का सहयोग रहा है। मण्डल इन सबका आभारी है।

आशा है, यह पुस्तक नवीन अभ्यार्थी के लिए सन्मार्ग का दीप-स्तम्भ बनेगी।

:: निवेदक ::

पारसचन्द हीरावत	**प्रमोद मोहनोत** **पदमचन्द कोठारी**	**विनयचन्द डागा**
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	मन्त्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

1. नवकार मंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्व साहूणं।

एसो पंच णमुक्कारो सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

जैन परम्परा में नवकार मंत्र का सर्वोच्च गौरव-पूर्ण स्थान है। प्राकृत भाषा में नमस्कार को नवकार कहते हैं। इसे पंच परमेष्ठी भी कहा जाता है। जिस व्यक्ति के मन में सदा नवकार मंत्र के उदात्त भाव का चिंतन चलता रहता है, उसका अहित नहीं हो सकता।

2. गुरु वन्दन सूत्र

(तिक्खुत्तो का पाठ)

तिक्खुत्तो, आयाहिणं पयाहिणं, करेमि वंदामि णमंसामि सक्कारेमि, सम्माणेमि। कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि, मत्थएण वंदामि।

यह गुरुवंदन सूत्र है। संसार के प्राणिमात्र के मन में अज्ञानात्मक अन्धकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश को फैलाने वाले गुरु कहलाते हैं।

आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में गुरु का पद सबसे ऊँचा है। संसार के काम, क्रोध एवं लोभ आदि भयंकर दोषों से हमको छुड़ाकर ज्ञान की राह दिखाने वाले, मुक्ति के मार्ग पर ले जाने वाले गुरु ही हैं। ऐसे गुरुदेव की विनयपूर्वक वंदना करना ही इस पाठ का प्रयोजन है।

3. आलोचना-सूत्र

(इच्छाकारेणं का पाठ)
(इर्यापथिक सूत्र)

इच्छाकारेणं संदिसह भगवं ! इरियावहियं पडि–क्कमामि, इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ, ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

प्रस्तुत पाठ के द्वारा गमना–गमन के दोषों का शोधन किया गया है। यत्नपूर्वक गमन करते हुए भी यदि कहीं प्रमाद के वश किसी जीव को पीड़ा पहुँची हो, तो उसके लिए उक्त पाठ में आलोचना की गई है।

4. उत्तरीकरण सूत्र

(तस्स उत्तरी का पाठ)

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोहि करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्त मुच्छाए सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं। एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं ण पारेमि। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि।

यह पाठ आगारों के साथ कायोत्सर्ग करने की प्रतिज्ञा का निर्देश करता है। कायोत्सर्ग शरीर को स्थिर, वचन को मौन तथा मन को एकाग्र रखकर किया जाता है।

5. कायोत्सर्ग शुद्धि-सूत्र

काउस्सग्ग में आर्त्तध्यान, रौद्र ध्यान ध्याया हो, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान न ध्याया हो। काउस्सग्ग में मन, वचन, काया चलायमान हुए हों, तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

6. उत्कीर्तन सूत्र

(चतुर्विंशतिस्तव)
(लोगस्स का पाठ)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।

उसभ मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3 ।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं णमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठणेमिं पासं तह वद्धमाणं च ।।4 ।।
एवं मए अभिथुआ, विहूय रयमला पहीण जरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5 ।।
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।6 ।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7 ।।

पाठ में भगवान् ऋषभदेव से लेकर भगवान् महावीर तक चौबीस तीर्थङ्करों की स्तुति की गई है। वे हमारे इष्टदेव हैं। अहिंसा और सत्य का मार्ग बताने वाले हैं। वे हमारे परम देव हैं।

भगवान का ध्यान करने से, भगवान के नाम का कीर्तन करने से और उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलने से जीवन पवित्र एवं दिव्य बनता है।

7. सामायिक प्रतिज्ञा सूत्र

(करेमि भंते का पाठ)
(सामायिक लेने का पाठ)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं, पच्चक्खामि। जाव नियमं *पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं ण करेमि, ण कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

इस पाठ के द्वारा साधक सामायिक करने की प्रतिज्ञा करता है। सामायिक एक प्रकार का आध्यात्मिक व्यायाम है। व्यायाम भले ही थोड़ी देर के लिए ही हो, परन्तु उसका प्रभाव और लाभ स्थायी होता है।

* जितनी सामायिक लेनी हों, उतने 'मुहूर्त उपरान्त नहीं पारुँ तब तक' ऐसा बोलें।

8. प्रणिपात सूत्र

(शक्रस्तव सूत्र)

(णमोत्थुणं का पाठ)

णमोत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्म-सारहीणं धम्मवर चाउरंत, चक्कवट्टीणं। दीवोत्ताणं सरण गई पइट्ठाणं। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं,

तिण्णाणं, तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं, मोयगाणं, सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं* णमो जिणाणं जिअभयाणं।

यह प्रणिपात सूत्र है। क्योंकि इसमें जिनेश्वर भगवान की स्तुति की गई है। देवेन्द्र शक्र इस पाठ के माध्यम से जिनेश्वर भगवान की स्तुति करता है। इसलिए इस पाठ को शक्रस्तव भी कहते हैं। इस पाठ के प्रथम वाचन में सिद्धों की एवं दूसरे वाचन में अरिहंतों की स्तुति की जाती है। स्तुति साहित्य में यह महत्त्वपूर्ण पाठ माना जाता है।

टिप्पणीह्न∗णमोत्थुणं के दूसरी बार के वाचन में 'ठाणं सपत्ताणं' के स्थान पर 'ठाणं संपाविउ कामाणं' का उच्चारण किया जाता है।

9. सामायिक समापन सूत्र

(एयस्स नवमस्स का पाठ)

(सामायिक पारने का पाठ)

एयस्स नवमस्स सामाइय–वयस्स पंच अइयारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा तं जहा मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइअकरणया, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।1।।

सामाइयं सम्मं काएणं, ण फासियं, ण पालियं ण तीरियं ण कीट्टियं, ण सोहियं, ण आराहियं, आणाए अणु पालियं ण भवइ, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।2।।

सामायिक में दस मन के, दस वचन के, बारह काया

के इन बत्तीस दोषों में से कोई दोष लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।3।।

सामायिक में स्त्री कथा[1], भक्त–कथा, देश कथा, राज कथा, इन चार विकथाओं में से कोई विकथा की हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।4।।

सामायिक में आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा, परिग्रह संज्ञा, इन चार संज्ञाओं में से किसी का सेवन किया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।5।।

सामायिक में अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार हुआ हो, जानते, अजानते मन, वचन, काया से सेवन किया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।6।।

सामायिक व्रत विधि से लिया, विधि से पाला, फिर भी विधि में कोई अविधि हुई हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।7।।

---

1. श्राविकाएँ ''स्त्री कथा'' के स्थान पर ''पुरुष कथा'' कहें।

सामायिक में पाठ उच्चारण करते काना, मात्रा, अनुस्वार, पद, अक्षर, ह्रस्व, दीर्घ, कम ज्यादा पढ़ा हो तो अनन्त सिद्ध केवली भगवान् की साक्षी से तस्स मिच्छा मि दुक्कडं । ।8 । ।

साधना में सावधानी रखते हुए भी भूलों का होना सहज है पर भूलों का संशोधन कर लेना साधक का कर्त्तव्य है। प्रस्तुत पाठ में सामायिक व्रत के पाँच अतिचार बताए गए हैं, जिनका आचरण नहीं करना चाहिये।

सामायिक व्रत का सम्यक् रूप से ग्रहण, स्पर्शन और पालन करना चाहिये, तभी उसकी साधना सम्यक् साधना हो सकती है।

◆◇◆

सामायिक ग्रहण करने की विधि

1. शान्त तथा एकान्त स्थान का चयन करें। (उपाश्रय अथवा घर में)
2. पूँजनी से उस स्थान का प्रमार्जन या प्रतिलेखन कर आसन बिछावें।
3. गृहस्थ वेश एवं वस्त्रों का परित्याग कर शुद्ध वस्त्र, यथाह्नसफेद धोती, उत्तरीय (दुपट्टा) धारण करें।
4. मुँह पर मुँहपत्ती धारण करें।
5. तत्पश्चात् गुरुजन या सतियाँ जी हों, तो उनकी ओर मुँह करके अथवा उनके न होने पर ईशान कोण (पूर्व और उत्तर के मध्य) अथवा उत्तर दिशा की ओर अभिमुख होकर बैठकर या खड़े होकर सामायिक सूत्र के पाठों का निम्न क्रमानुसार उच्चारण करें–

(क) **गुरुवन्दन सूत्र (तिक्खुत्तो)ह्न**तीन बार

(ख) **नवकार मंत्रह्न**एक बार

(ग) **आलोचना सूत्र (इच्छाकारेणं का पाठ)ह्न**एक बार

(घ) **उत्तरीकरण सूत्र (तस्स उत्तरी का पाठ)ह्न**एक बार अप्पाणं वोसिरामि से पहले ''**एक इच्छाकारेणं का काउस्सग्ग**'' बोलें। पश्चात् इच्छाकारेणं के पाठ का काउस्सग्ग करें। काउस्सग्ग की विधि इस प्रकार से हैह्नखड़े होकर दोनों पैर धरती पर समस्थापित कर दोनों पैरों के बीच में पीछे तीन अंगुल और आगे अँगूठों के बीच में चार अंगुल जगह छोड़कर दोनों हाथ सीधे लटका कर पैरों के अंगूठों के बीच में दृष्टि जमा कर वांछित पाठ का काउस्सग्ग (मन में उच्चारण) करें। यदि बैठे हुए काउस्सग्ग करना हो, तो पालथी लगाकर पालथी के मध्य भाग में बाँए हाथ की हथेली के ऊपर दाएँ हाथ की हथेली रखकर हथेली की सीध में दृष्टि जमाकर ''अप्पाणं वोसिरामि'' शब्द बोलने के साथ काउस्सग्ग अवस्थित हो वांछित पाठ का मौन

उच्चारण करें। काउस्सग्ग पूर्ण होने पर ''णमो अरिहंताणं'' बोलें।

(ङ) **कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठह्न**एक बार

(च) **उत्कीर्तन सूत्र (लोगस्स का पाठ)ह्न**एक बार

(छ) **प्रतिज्ञा सूत्र (करेमि भंते का पाठ)ह्न**एक बार पाठ बोलते समय ''जावनियमं'' के पश्चात् जितनी सामायिक लेनी हो, उतने मुहूर्त्त[1] उपरान्त न पालूँ तब तक, कह कर ''पज्जुवासामि'' बोलते हुए पाठ पूरा करें।

(ज) **शक्रस्तवह्नप्रणिपात सूत्र (णमोत्थुणं का पाठ)ह्न**दो बार। यह पाठ पढ़ने से पहले बायाँ घुटना खड़ा कर इस घुटने पर अञ्जलिबद्ध दोनों हाथ रखें। फिर इन पाठों का उच्चारण करें। दूसरे 'णमोत्थुणं' के वाचन में ''ठाणं संपत्ताणं'' के स्थान पर ''ठाणं संपाविउ कामाणं'' का उच्चारण करें।

---

1. एक मुहूर्त्त 48 मिनिट का होता है।

◆◇◆

सामायिक पारने की विधि

जितनी सामायिक का व्रत ग्रहण किया, उतना मुहूर्त्त (समय) पूर्ण होने पर निम्न पाठ बोलें :ह्न

1. **नवकार मंत्रह्न**एक बार।
2. **इच्छाकारेणं का पाठह्न**एक बार।
3. **तस्सउत्तरी का पाठह्न**एक बार।
   ''झाणेणं'' तब बोलकर **''एक लोगस्स का काउस्सग्ग''** फिर **''अप्पाणं वोसिरामि''** बोलें। इसके पश्चात् मन में **लोगस्स का पाठ** का काउस्सग्ग करें। काउस्सग्ग पूर्ण होने पर ''णमो अरिहंताणं'' प्रकट में बोलें।
4. **कायोत्सर्ग-शुद्धि का पाठह्न**एक बार।
5. **उत्कीर्तन सूत्र (लोगस्स का पाठ)ह्न**एक बार।
6. **णमोत्थुणं का पाठह्न**दो बार।
7. **एयस्स नवमस्स का पाठह्न**एक बार।
8. **नवकार मंत्रह्न**तीन बार।

चौबीस तीर्थङ्करों के नाम

1. श्री ऋषभदेव जी
2. श्री अजितनाथ जी
3. श्री सम्भवनाथ जी
4. श्री अभिनन्दन जी
5. श्री सुमतिनाथ जी
6. श्री पद्मप्रभ जी
7. श्री सुपार्श्वनाथ जी
8. श्री चन्द्रप्रभ जी
9. श्री सुविधिनाथ जी
10. श्री शीतलनाथ जी
11. श्री श्रेयांसनाथ जी
12. श्री वासुपूज्य जी
13. श्री विमलनाथ जी
14. श्री अनन्तनाथ जी
15. श्री धर्मनाथ जी
16. श्री शान्तिनाथ जी
17. श्री कुन्थुनाथ जी
18. श्री अरनाथ जी
19. श्री मल्लिनाथ जी
20. श्री मुनिसुव्रत जी
21. श्री नमिनाथ जी
22. श्री अरिष्टनेमि जी
23. श्री पार्श्वनाथ जी
24. श्री महावीरस्वामी जी

◆◇◆

बीस विहरमानों के नाम

1. श्री सीमंधरस्वामी जी
2. श्री युगमन्धरस्वामी जी
3. श्री बाहुस्वामी जी
4. श्री सुबाहुस्वामी जी
5. श्री सुजातस्वामी जी
6. श्री स्वयंप्रभस्वामी जी
7. श्री ऋषभाननस्वामी जी
8. श्री अनन्तवीर्यस्वामी जी
9. श्री सूरप्रभस्वामी जी
10. श्री विशालधरस्वामी जी
11. श्री वज्रधरस्वामी जी
12. श्री चन्द्राननस्वामी जी
13. श्री चन्द्रबाहुस्वामी जी
14. श्री भुजङ्गस्वामी जी
15. श्री ईश्वरस्वामी जी

16. श्री नेमीश्वरस्वामी जी

17. श्री वीरसेनस्वामी जी

18. श्री महाभद्रस्वामी जी

19. श्री देवयशस्वामी जी

20. श्री अजितवीर्यस्वामी जी

◆◇◆

ग्यारह गणधरों के नाम

1. श्री इन्द्रभूति जी
2. श्री अग्निभूति जी
3. श्री वायुभूति जी
4. श्री व्यक्तस्वामी जी
5. श्री सुधर्मास्वामी जी
6. श्री मण्डितपुत्र जी
7. श्री मौर्यपुत्र जी
8. श्री अकंपित जी
9. श्री अचलभ्राता जी
10. श्री मेतार्यस्वामी जी
11. श्री प्रभासस्वामी जी

◆◇◆

सोलह सतियों के नाम

1. श्री ब्राह्मी जी
2. श्री सुन्दरी जी
3. श्री कौशल्या जी
4. श्री सीता जी
5. श्री राजीमती जी
6. श्री कुन्ती जी
7. श्री द्रौपदी जी
8. श्री चन्दनबाला जी
9. श्री मृगावती जी
10. श्री पुष्पचूला जी
11. श्री प्रभावती जी
12. श्री सुभद्रा जी
13. श्री दमयन्ती जी
14. श्री सुलसा जी
15. श्री शिवादेवी जी
16. श्री पद्मावती जी

◆◇◆

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
के विविध सेवा सोपान

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का प्रकाशन

जैन इतिहास, आगम एवं अन्य सत्साहित्य का प्रकाशन

अखिल भारतीय श्री जैन विद्वत् परिषद का संचालन

उक्त प्रवृत्तियों में दानी एवं प्रबुद्ध चिन्तकों के रचनात्मक सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

सम्पर्क सूत्र
मंत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार
जयपुर-302003 (राजस्थान)
दूरभाष : 0141-2575997, फैक्स : 4068798
ई-मेल : sgpmandal@yahoo.in